SAMPLE QUESTION PAPER - 2
Hindi B (085)
Class X (2025-26)

निर्धारित समय: 3 घंटे **अधिकतम अंक: 80**

सामान्य निर्देश:

- इस प्रश्नपत्र में चार खंड हैं - क, ख, ग और घ
- खंड क में अपठित गदयांश से प्रश्न पूछे गए हैं, जिनके उत्तर दिए गए निर्देशों का पालन करते हुए दीजिए।
- खंड ख में व्यावहारिक व्याकरण से प्रश्न पूछे गए हैं, आंतरिक विकल्प भी दिए गए हैं।
- खंड ग पाठ्यपुस्तक पर आधारित है, निर्देशानुसार उत्तर दीजिए।
- खंड घ रचनात्मक लेखन पर आधारित है आंतरिक विकल्प भी दिए गए हैं।
- प्रश्न पत्र में कुल 16 प्रश्न हैं, सभी प्रश्न अनिवार्य है।
- यथासंभव सभी खंडों के प्रश्नों के उत्तर क्रमशः लिखिए।

खंड क - अपठित बोध

1. **निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए-** **[7]**

जाति-प्रथा को यदि श्रम-विभाजन मान लिया जाए, तो यह स्वाभाविक विभाजन नहीं है, क्योंकि यह मनुष्य की रुचि पर आधारित नहीं है। कुशल व्यक्ति या सक्षम श्रमिक-समाज का निर्माण करने के लिए यह आवश्यक है कि हम व्यक्ति की क्षमता इस सीमा तक विकसित करें, जिससे वह अपने पेशे या कार्य का चुनाव स्वयं कर सके। इस सिद्धांत के विपरीत जाति-प्रथा का दूषित सिद्धांत यह है कि इससे मनुष्य के प्रशिक्षण अथवा उसकी निजी क्षमता का विचार किए बिना, दूसरे ही दृष्टिकोण, जैसे माता-पिता के सामाजिक स्तर, के अनुसार पहले से ही अर्थात् गर्भधारण के समय से ही मनुष्य का पेशा निर्धारित कर दिया जाता है।

जाति-प्रथा पेशे का दोषपूर्ण पूर्वनिर्धारण ही नहीं करती, बल्कि मनुष्य को जीवन-भर के लिए एक पेशे में बाँध भी देती है, भले ही पेशा अनुपयुक्त या अपर्याप्त होने के कारण वह भूखे मर जाए। आधुनिक युग में यह स्थिति प्रायः आती है, क्योंकि उद्योग-धंधे की प्रक्रिया व तकनीक में निरंतर विकास और कभी-कभी अकस्मात परिवर्तन हो जाता है, जिसके कारण मनुष्य को अपना पेशा बदलने की आवश्यकता पड़ सकती है और यदि प्रतिकूल परिस्थितियों में भी मनुष्य को अपना पेशा बदलने की स्वतंत्रता न हो तो इसके लिए भूखे मरने के अलावा क्या चारा रह जाता है? हिंदू धर्म की जाति-प्रथा किसी भी व्यक्ति को ऐसा पेशा चुनने की अनुमति नहीं देती है, जो उसका पैतृक पेशा न हो, भले ही वह उसमें पारंगत है। इस प्रकार पेशा-परिवर्तन की अनुमति न देकर जाति-प्रथा भारत में बेरोज़गारी का एक प्रमुख व प्रत्यक्ष कारण बनी हुई है।

1. जाति-प्रथा के सिद्धांत को दूषित क्यों कहा गया है? **(1)**
   (क) यह मनुष्य की रुचि पर आधारित है।
   (ख) वह पूरी तरह माता-पिता की जाति पर ही निर्भर है।
   (ग) मनुष्य को अपना पेशा बदलने की आवश्यकता पड़ सकती है।
   (घ) सक्षम श्रमिक-समाज का निर्माण करने के लिए आवश्यक है
2. कथन (A) और कारण (R) को पढ़कर उपयुक्त विकल्प चुनिए:
   कथन (A): जाति-प्रथा पेशे का पूर्वनिर्धारण करती है और मनुष्य को जीवन-भर एक पेशे में बाँध देती है।
   कारण (R): जाति-प्रथा से मनुष्य को पेशा बदलने की स्वतंत्रता नहीं मिलती, जिससे बेरोज़गारी और भूखमरी की स्थिति उत्पन्न होती है।
   विकल्प:

(क) कथन (A) गलत है, किंतु कारण (R) सही है।

(ख) कथन (A) और कारण (R) दोनों ही गलत हैं।

(ग) कथन (A) सही है और कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या है।

(घ) कथन (A) सही है किंतु कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या नहीं है।

3. जाति-प्रथा को यदि श्रम-विभाजन मान लिया जाए, तो यह स्वाभाविक विभाजन नहीं है। क्यों? **(1)**

(क) क्योंकि यह सामाजिक बुराई है।

(ख) क्योंकि यह अत्यंत जटिल है।

(ग) क्योंकि यह ब्राह्मणवादी है।

(घ) क्योंकि यह मनुष्य की रुचि पर आधारित नहीं है।

4. कुशल श्रमिक-समाज का निर्माण करने के लिए क्या आवश्यक है? **(2)**

5. "जाति-प्रथा पेशे का न केवल दोषपूर्ण पूर्वनिर्धारण करती है, बल्कि मनुष्य को जीवन-भर के लिए एक पेशे से बाँध देती है।"-कथन पर उदाहरण सहित टिप्पणी कीजिए। **(2)**

2. **निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।** **[7]**

सत्संग से हमारा अभिप्राय उत्तम प्रकृति के व्यक्तियों की संगति से है। मानव मन में श्रेष्ठ एवं गर्हित भावनाएँ मिश्रित रूप से विद्यमान रहती हैं। कुछ व्यक्ति सहज सुलभ सद्गुणों की उपेक्षा करके कुमार्ग का अनुगमन करते हैं। उनकी संगति प्रत्येक के लिए भयंकर सिद्ध होती है। वे न केवल अपना ही विनाश करते हैं, अपितु अपने साथ रहने तथा वार्तालाप करने वालों के जीवन और चरित्र को भी पतन अथवा विनाश के गर्त की ओर उन्मुख करते हैं। अतः ऐसे व्यक्तियों की संगति से सदैव बचना चाहिए। विश्व में प्रायः ऐसे मनुष्य ही अधिक हैं जो उत्कृष्ट और निकृष्ट दोनों प्रकार की मनोवृत्तियों से युक्त होते हैं। उनका साथ यदि किसी के लिए लाभप्रद नहीं होता तो हानिकारक भी नहीं होता। इसके अतिरिक्त तृतीय प्रकार के मनुष्य वे हैं जो गर्हित भावनाओं का दमन करके केवल उत्कृष्ट गुणों का विकास करते हैं। ऐसे व्यक्ति निश्चय ही महान प्रतिभा-सम्पन्न होते हैं। उनकी संगति प्रत्येक व्यक्ति में उत्कृष्ट गुणों का संचार करती है। उन्हीं की संगति को सत्संग के नाम से पुकारा जाता है।

1. सत्संग से लेखक का क्या अभिप्राय है? (1)

(क) सहज सुलभ व्यक्तियों की संगति को

(ख) उत्तम प्रकृति के व्यक्तियों की संगति को

(ग) भावनाओं का दमन करने वाले की संगति को

(घ) उत्कृष्ट और निकृष्ट दोनों प्रकार के व्यक्तियों की संगति को

2. कथन (A) और कारण (R) को पढ़कर उपयुक्त विकल्प चुनिए:

कथन (A): सत्संग से हमारा अभिप्राय उत्तम प्रकृति के व्यक्तियों की संगति से है, जो दूसरों के जीवन और चरित्र को उत्कृष्ट बनाते हैं।

कारण (R): कुछ व्यक्ति अपनी खराब संगति के कारण अपने साथियों के जीवन को पतन की ओर ले जाते हैं।

विकल्प:

(क) कथन (A) गलत है, किंतु कारण (R) सही है।

(ख) कथन (A) और कारण (R) दोनों ही गलत हैं।

(ग) कथन (A) सही है और कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या है।

(घ) कथन (A) सही है किंतु कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या नहीं है।

3. इस गद्यांश के अनुसार दो प्रकार की मनोवृत्तियाँ कौन सी हैं?(1)

(क) लाभदायक और हानिकारक

(ख) उत्तम और निम्नतम

(ग) उत्कृष्ट और निकृष्ट

(घ) अच्छी और बुरी

4. कुमार्ग का अनुगमन करने वालों की संगति भयंकर क्यों सिद्ध होती है? (2)

5. 'महान प्रतिभा सम्पन्न' व्यक्ति किसे कह सकते हैं? (2)

खंड ख - व्यावहारिक व्याकरण

3. निम्नलिखित वाक्यों में से **किन्हीं चार** प्रश्नों के उत्तर दीजिए। **[4]**

i. कितना भद्दा और मरियल-सा पिल्ला है। इस वाक्य में **विशेषण पदबंध** पहचानिए।

ii. शैलेन्द्र ने राजकपूर की भावनाओं को <u>**शब्द दिए हैं**</u>। रेखांकित पदबंध का नाम लिखिए।

iii. तकदीर का मारा वह यहाँ आ पहुँचा। इसमें **सर्वनाम पदबंध** कौन सा है?

iv. माँ कल सुबह तक आएँगी। वाक्य में **क्रिया-विशेषण** पदबंध क्या है?

v. <u>**जो लड़की नाच रही है**</u>, वह सुजाता की बहन है। रेखांकित पदबंध का नाम लिखिए।

4. नीचे लिखे वाक्यों में से **किन्हीं चार** वाक्यों का रूपांतरण कीजिए - **[4]**

i. वे हरदम किताबें खोलकर अध्ययन करते रहते थे। **(संयुक्त वाक्य)**

ii. मैं सफल हुआ और कक्षा में प्रथम स्थान पर आया। **(सरल वाक्य)**

iii. एक बार बिल्ली ने उचककर दो में से एक अण्डा तोड़ दिया। **(मिश्र वाक्य)**

iv. वह छह मंजिली इमारत की छत थी जिस पर एक पर्णकुटी बनी थी। **(सरल वाक्य)**

v. बरसात होने पर सूरज छिप जाता है। **(मिश्र वाक्य में)**

5. **'समास' पर आधारित पाँच प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लिखिए -** **[4]**

i. समास और संधि में क्या अंतर है? **[1]**

ii. अव्ययीभाव समास में पूर्व पद और उत्तर पद का महत्व समझाइए। **[1]**

iii. 'सिद्धार्थ' शब्द का समास विग्रह करते हुए इसके भेदों को स्पष्ट कीजिए। **[1]**

iv. 'पृथ्वीपति' शब्द का समास विग्रह करते हुए भेद लिखिए। **[1]**

v. 'त्रिलोकीनाथ' शब्द का समास विग्रह कीजिए और इसके भेदों को स्पष्ट कीजिए। **[1]**

6. **'मुहावरे' पर आधारित पाँच प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लिखिए -** **[4]**

i. Fill in the blanks: **[1]**

जरा सी बात पर ________ बनाना सही नहीं है। (उपयुक्त मुहावरे द्वारा रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए।)

ii. Fill in the blanks: **[1]**

फैक्ट्री में सील लगने से मज़दूर ________ को विवश हो गए। (उपयुक्त मुहावरे द्वारा रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए।)

iii. 'अंधे के हाथ बटेर लगना' और 'ऊंट के मुंह में जीरा' में अंतर बताइए। **[1]**

iv. 'घर फूंक तमाशा देखना' का वाक्य लिखिए। **[1]**

v. "मौका हाथ से निकल जाने पर वह हाथ मलता रह गया।" इस पंक्ति का मुहावरा पहचानकर प्रयोग करें। **[1]**

खंड ग - गद्य खंड (पाठ्यपुस्तक)

7. **अनुच्छेद को ध्यानपूर्वक पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिये:** **[5]**

तताँरा लहूलुहान हो चुका था... वह अचेत होने लगा और कुछ देर बाद उसे कोई होश नहीं रहा। वह कटे हुए द्वीप के अंतिम भूखंड पर पड़ा हुआ था जो कि दूसरे हिस्से से संयोगवश जुड़ा था। बहता हुआ तताँरा कहाँ पहुँचा, बाद में उसका क्या हुआ कोई नहीं जानता। इधर वामीरो पागल हो उठी। वह हर समय तताँरा को खोजती हुई उसी जगह पहुँचती और घंटों बैठी रहती। उसने खाना-पीना छोड़ दिया। परिवार से वह एक तरह विलग हो गई। लोगों ने उसे ढूँढ़ने की बहुत कोशिश की किंतु कोई सुराग न मिल सका। आज न तताँरा है न वामीरो किंतु उनकी यह प्रेमकथा घर-घर में सुनाई जाती है। निकोबारियों का मत है कि तताँरा की तलवार से कार-निकोबार के जो टुकड़े हुए, उसमें दूसरा लिटिल अंदमान है जो कार-निकोबार से आज 96 कि.मी. दूर स्थित है। निकोबारी इस घटना के बाद दूसरे गाँवों में भी आपसी वैवाहिक संबंध करने लगे। तताँरा-वामीरो की त्यागमयी मृत्यु शायद इसी सुखद परिवर्तन के लिए थी।

i. निकोबारी दूसरे गाँवों में वैवाहिक संबंध क्यों करने लगे?

क) पशु पर्व के कारण
ख) शाप के कारण
ग) तताँरा-वामीरो के त्याग के कारण
घ) बदलती पीढ़ी के कारण

ii. कौन-सी घटना ने वामीरो को पागल बना दिया?

क) द्वीप का बँट जाना

ख) तताँरा से विवाह

ग) तताँरा का नहीं मिलना

घ) परिवार से अलग होना

iii. निम्नलिखित कथन (A) तथा कारण (R) को ध्यानपूर्वक पढ़िए। उसके बाद दिए गए विकल्पों में से कोई एक सही विकल्प चुनकर लिखिए।

कथन (A): वामीरो तताँरा को हमेशा ढूँढती रहती थी।

कारण (R): तताँरा को कोई होश नहीं था।

क) कथन (A) गलत है लेकिन कारण (R) सही है।

ख) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों सही हैं तथा कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या करता है।

ग) कथन (A) सही है लेकिन कारण (R) उसकी गलत व्याख्या करता है।

घ) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों गलत है।

iv. आज भी घर-घर में क्या सुनाई जाती है?

क) तताँरा की वीरता

ख) तताँरा-वामीरो की प्रेमकथा

ग) वामीरो के गीत

घ) विवाह की कथा

v. कौन अचेत होने लगा था?

क) तताँरा

ख) वामीरो की माँ

ग) गाँववासी

घ) वामीरो

8. **निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर लगभग 25-30 शब्दों में दीजिए:** **[6]**

i. लेखक ने ग्वालियर से बंबई तक किन बदलावों को महसूस किया? **अब कहाँ दूसरे के दुख से दुखी होने वाले** पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए। **[2]**

ii. **झेन की देन** पाठ के आधार पर बताइए कि जापान के लोगों में किस प्रकार के रोग बढ़ रहे हैं और क्यों? **[2]**

iii. कारतूस एकांकी से हमें क्या शिक्षा मिलती है? **[2]**

iv. बड़े भाई साहब के व्यवहार में छोटे भाई के प्रति नरमी क्यों आ गई थी? बड़े भाई साहब पाठ के आधार पर लिखिए। **[2]**

खंड ग - काव्य खंड (पाठ्यपुस्तक)

9. **अनुच्छेद को ध्यानपूर्वक पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिये:** **[5]**

हम घर जाल्या आपणाँ, लिया मुराड़ा हाथि।
अब घर जालौं तास का, जो चले हमारे साथि।।

i. घर जाल्या आपणाँ से क्या तात्पर्य है?

क) मनुष्य को वैभवपूर्ण आकर्षणों से विमुख करना

ख) मनुष्य को पारिवारिक आकर्षणों से विमुख करना

ग) सभी

घ) मनुष्य को भौतिक आकर्षणों से विमुख करना

ii. आपणाँ शब्द का क्या अर्थ है?

क) अपनापन

ख) अपना

ग) अलग होना

घ) दूसरा

iii. कबीर का मार्ग कैसा है?

क) मक्कड़ संतों का

ख) सधुक्कड़ संतों का

ग) फक्कड़ संतों का

घ) फक्कड़, ज्ञान-मार्गी संतों का

iv. कबीर के दोहों की भाषा कैसी है?

क) मैथिली

ख) ब्रजभाषा

ग) बिहारी

घ) भाषा

v. निम्नलिखित वाक्यों को ध्यान पूर्वक पढ़ें।

i. कबीर कहते हैं कि हमें भौतिक आकर्षणों से दूर रहना चाहिए।
ii. कबीर अपने अहं को त्यागने की बात करते हैं।
iii. कबीर अपने घर को जलाने की बात करते हैं।
iv. कबीर पाखंडों और आडंबरों को मानते हैं।
v. कबीर सबको अपने पीछे आने के लिए कहते हैं।

क) विकल्प (i), (iii) और (v)

ख) (ii), (iii) और (iv)

ग) विकल्प (iv) और (v)

घ) विकल्प (i) और (ii)

10. **निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर लगभग 25-30 शब्दों में दीजिए:** **[6]**

i. **हरि आप हरो जन री भीर** पद के आधार पर सिद्ध कीजिए कि मीरा यदि एक ओर श्रीकृष्ण की क्षमताओं का गुणगान करती हैं तो दूसरी ओर उन्हें उनके कर्तव्य की याद दिलाने में भी विलंब नहीं करती। **[2]**

ii. तोप और चिड़ियाँ किसका प्रतीक है? तोप कविता के आधार पर स्पष्ट कीजिए। **[2]**

iii. **कर चले हम फिदा** कविता से उद्धृत - **साँस थमती गई, नब्ज़ जमती गई** - पंक्ति के संदर्भ में सैनिक जीवन की कठिनाइयों का उल्लेख कीजिए। **[2]**

iv. कवि ने विश्वास बनाए रखने के लिए ईश्वर से प्रार्थना किन परिस्थितियों में की है? **आत्मत्राण** कविता के आधार पर बताइए। **[2]**

खंड ग - संचयन (पूरक पाठ्यपुस्तक)

11. **निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 50-60 शब्दों में दीजिए:** **[6]**

i. **हरिहर काका** के जीवन में आई कठिनाइयों का मूल कारण क्या था? ऐसी सामाजिक समस्या के समाधान के क्या उपाय हो सकते हैं? लिखिए। **[3]**

ii. **सपनों के से दिन** पाठ के आधार पर बताइए कि ओमा कौन था? उसकी क्या विशेषता थी? **[3]**

iii. इफ्फन के पिता के तबादले के बाद टोपी शुक्ला का अकेलापन और महंत और भाइयों के दुर्व्यवहार के कारण **हरिहर काका** का मौन धारण वर्तमान समाज की ऐसी सच्चाई है, जिससे आज बहुत से लोग पीड़ित हैं। इस स्थिति से निकलने में आप ऐसे लोगों को क्या सुझाव देंगे? **[3]**

खंड घ - रचनात्मक लेखन

12. **निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर लगभग 120 शब्दों में अनुच्छेद लिखिये:** **[5]**

i. **प्रातःकालीन भ्रमण** विषय पर दिए गए संकेत बिंदुओं के आधार पर अनुच्छेद लिखिए। **[5]**

- प्रकृति से संपर्क
- शारीरिक व्यायाम
- सेहत के लिए उपयोगी व लाभदायक

ii. **इंटरनेट : सूचनाओं की खान** विषय पर दिए गए संकेत बिंदुओं के आधार पर अनुच्छेद लिखिए। **[5]**

- तकनीक का अद्भुत वरदान
- इंटरनेट क्रांति
- सूचना स्रोत
- प्रयोग के लिए सजगता

iii. **मेरे सपनों का भारत** विषय पर दिए गए संकेत बिंदुओं के आधार पर अनुच्छेद लिखिए। **[5]**

- भारत के बारे में मेरे विचार
- सांप्रदायिकता आदि से मुक्त उन्नत भारत की चाह
- सुखी समृद्ध भारत

13. आप अंकित/अंकिता हैं। आप अकसर अपनी सोसायटी में लोगों को बिना मास्क पहने घूमते देखते हैं, जबकि कोरोना के बढ़ते मामलों को देखते हुए सरकार ने मास्क पहनना अनिवार्य किया हुआ है। इसकी शिकायत करते हुए सोसायटी के सचिव को लगभग 120 शब्दों में पत्र लिखिए। **[5]**

अथवा

आपको विद्यालय में खेलने का अवसर नहीं मिलता। कह दिया जाता है कि छात्र संख्या अधिक होने से सबके लिए व्यवस्था नहीं हो सकती। प्रधानाचार्य को पत्र लिखकर इस समस्या पर चर्चा कीजिए और एक उपाय भी सुझाइए।

14. मुहल्ला समिति के सचिव की ओर से कॉलोनी में आयोजित होने वाले **दीवाली मेला** की सूचना लिखिए। **[4]**

अथवा

आप हर्ष चतुर्वेदी/हर्षा चतुर्वेदी हैं और विकास माध्यमिक विद्यालय के छात्र परिषद् के अध्यक्ष/की अध्यक्षा हैं। विद्यालय में आयोजित होने वाली **कैरियर परामर्श कार्यशाला** की जानकारी देते हुए एक सूचना तैयार कीजिए।

15. आपको अपने कारोबार के लिए ऑफिस खरीदना है। उसके लिए लगभग 50 शब्दों में विज्ञापन तैयार कीजिए। **[3]**

अथवा

शैंपू बनाने वाली कंपनी के मालिक ने विज्ञापन बनाने को दिया है। आकर्षक विज्ञापन तैयार कीजिए।

16. छात्रों के लिए अधिक खेल-सामग्री उपलब्ध कराने का अनुरोध करते हुए अपने प्रधानाचार्य महोदय को xyzschool@gmail.com पर एक ईमेल लिखिए। **[5]**

अथवा

आकाश में दिखा इंद्रधनुष ... विषय पर एक लघुकथा लिखिए।

Solution

खंड क - अपठित बोध

1. 1. (ख) जाति-प्रथा का सिद्धांत इसलिए दूषित कहा गया है, क्योंकि वह व्यक्ति की क्षमता या रुचि के अनुसार उसके चुनाव पर आधारित नहीं है। वह पूरी तरह माता-पिता की जाति पर ही अवलंबित और निर्भर है।
   2. (ग) कथन (A) सही है और कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या है।
   3. (घ) क्योंकि यह मनुष्य की रुचि पर आधारित नहीं है।
   4. कुशल या सक्षम श्रमिक-समाज का निर्माण करने के लिए आवश्यक है कि हम जातीय जड़ता को त्यागकर प्रत्येक व्यक्ति को इस सीमा तक विकसित एवं स्वतंत्र करें, जिससे वह अपनी कुशलता के अनुसार कार्य का चुनाव स्वयं करे। यदि श्रमिकों को मनचाहा कार्य मिले तो कुशल श्रमिक-समाज का निर्माण स्वाभाविक है।
   5. जाति-प्रथा व्यक्ति की क्षमता, रुचि और इसके चुनाव पर निर्भर न होकर, गर्भाधान के समय से ही, व्यक्ति की जाति का पूर्वनिर्धारण कर देती है, जैसे- धोबी, कुम्हार, सुनार आदि।
2. 1. (ख) उत्तम प्रकृति के व्यक्तियों की संगति को लेखक ने सत्संग कहा है।
   2. (ग) कथन (A) सही है और कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या है।
   3. (ग) उत्कृष्ट और निकृष्ट
   4. कुमार्ग का अनुगमन करने वाले न केवल अपना विनाश करते हैं, अपितु अपने साथ रहने तथा वार्तालाप करने वालों के जीवन और चरित्र को भी पतन अथवा विनाश के गर्त की ओर उन्मुख करते हैं।
   5. वे व्यक्ति जो गर्हित भावनाओं का दमन करके केवल उत्कृष्ट गुणों का विकास करते हैं, 'महान प्रतिभा-सम्पन्न' व्यक्ति कहलाते हैं।

खंड ख - व्यावहारिक व्याकरण

3. i. भद्दा और मरियल-सा
   ii. क्रिया पदबंध
   iii. तकदीर का मारा वह
   iv. कल सुबह तक
   v. सर्वनाम पदबंध
4. i. वे हरदम किताबें खोलते थे और अध्ययन करते रहते थे।
   ii. मैं सफल होने पर कक्षा में प्रथम स्थान पर आया।
   iii. जैसे ही एक बार बिल्ली उचकी, उसने दो में से एक अंडा तोड़ दिया।
   iv. उस छह मंजिली इमारत की छत पर एक पर्णकुटी बनी थी।
   v. जब बरसात होती है तब सूरज छिप जाता है।
5. 'समास' पर आधारित पाँच प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लिखिए -
   (i) संधि में ध्वनियों का मेल होता है और उनके उच्चारण में परिवर्तन होता है, जबकि समास में शब्दों का मेल होता है और नए शब्द का निर्माण होता है। उदाहरण:
   - संधि: सूर्य + उदय = सूर्योदय।
   - समास: सूर्य + किरण = सूर्यकिरण।

   (ii) अव्ययीभाव समास में पूर्व पद एक अव्यय (जिसे शब्द से बदला नहीं जा सकता) होता है, और उत्तर पद किसी संज्ञा या विशेषण का रूप होता है। उदाहरण - "यथाशक्ति" (शक्ति के अनुसार) में "यथा" पूर्व पद है जो अव्यय है, और "शक्ति" उत्तर पद है जो एक संज्ञा है।

   (iii)
   - विग्रह: सिद्ध + अर्थ
   - भेद: यह तत्पुरुष समास है, जिसमें "सिद्ध" (पूंजी) और "अर्थ" (उद्देश्य) मिलकर "सिद्धार्थ" (सिद्ध उद्देश्य वाला) का अर्थ देते हैं।

   (iv)विग्रह: पृथ्वी + पति
   भेद: यह तत्पुरुष समास है, जिसमें "पृथ्वी" (धरती) और "पति" (स्वामी) मिलकर "पृथ्वीपति" (धरती का स्वामी) का अर्थ बनाते हैं।

   (v)
   - विग्रह: त्रि + लोक + नाथ
   - भेद: यह तत्पुरुष समास है। "त्रि" (तीन), "लोक" (दुनिया), और "नाथ" (स्वामी) के मिलकर एक नया अर्थ उत्पन्न होता है - "तीनों लोकों का स्वामी" (ईश्वर)।
6. 'मुहावरे' पर आधारित पाँच प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लिखिए -
   (i) राई का पहाड़
   (ii) बेकार बैठने
   (iii)अंधे के हाथ बटेर लगना: भाग्यवश कोई अच्छी चीज मिल जाना।
   ऊंट के मुंह में जीरा: आवश्यकता से बहुत कम चीज प्राप्त होना।
   (iv)उसने अपनी सारी संपत्ति बेचकर व्यापार में लगा दी, यह तो घर फूंक तमाशा देखना है।

(v) मुहावरा: हाथ मलना।
वाक्य: व्यापार में बड़ा नुकसान होने के बाद वह हाथ मलता रह गया।

खंड ग - गद्य खंड (पाठ्यपुस्तक)

7. **अनुच्छेद को ध्यानपूर्वक पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिये:**

तताँरा लहूलुहान हो चुका था... वह अचेत होने लगा और कुछ देर बाद उसे कोई होश नहीं रहा। वह कटे हुए द्वीप के अंतिम भूखंड पर पड़ा हुआ था जो कि दूसरे हिस्से से संयोगवश जुड़ा था। बहता हुआ ततॉरा कहाँ पहुँचा, बाद में उसका क्या हुआ कोई नहीं जानता। इधर वामीरो पागल हो उठी। वह हर समय ततॉरा को खोजती हुई उसी जगह पहुँचती और घंटों बैठी रहती। उसने खाना-पीना छोड़ दिया। परिवार से वह एक तरह विलग हो गई। लोगों ने उसे ढूँढ़ने की बहुत कोशिश की किंतु कोई सुराग न मिल सका। आज न ततॉरा है न वामीरो किंतु उनकी यह प्रेमकथा घर-घर में सुनाई जाती है। निकोबारियों का मत है कि ततॉरा की तलवार से कार-निकोबार के जो टुकड़े हुए, उसमें दूसरा लिटिल अंदमान है जो कार-निकोबार से आज 96 कि.मी. दूर स्थित है। निकोबारी इस घटना के बाद दूसरे गाँवों में भी आपसी वैवाहिक संबंध करने लगे। ततॉरा-वामीरो की त्यागमयी मृत्यु शायद इसी सुखद परिवर्तन के लिए थी।

(i) **(ग)** ततॉरा-वामीरो के त्याग के कारण
व्याख्या: ततॉरा-वामीरो के त्याग के कारण

(ii) **(ग)** ततॉरा का नहीं मिलना
व्याख्या: ततॉरा का नहीं मिलना

(iii) **(ग)** कथन (A) सही है लेकिन कारण (R) उसकी गलत व्याख्या करता है।
व्याख्या:
कथन (A) सही है लेकिन कारण (R) उसकी गलत व्याख्या करता है।

(iv) **(ख)** ततॉरा-वामीरो की प्रेमकथा
व्याख्या: ततॉरा-वामीरो की प्रेमकथा

(v) **(क)** ततॉरा
व्याख्या: ततॉरा

8. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर लगभग 25-30 शब्दों में दीजिए:

(i) लेखक ने ग्वालियर से बम्बई तक अनेक बदलावों को महसूस किया जैसे पहले बड़े बड़े घर, आँगन और दालान होते थे। अब डिब्बे जैसे घरों में लोग सिमट कर रह गए है। चारों ओर इमारतें और केवल इमारतें ही पाई जाती हैं। पहले सब मिलजुल कर रहते थे, अब आत्मकेन्द्रित हो गए हैं।। खुले स्थानों, पशु पक्षियों के रहने के स्थानों का अभाव दिखाई देता है। पहले पशु -पक्षियों को घरों में स्थान मिलता था, आज उनके घर आने के रास्तों को ही बंद कर दिया जाता है। इससे स्पष्ट होता है कि मानव स्वार्थी हो गया है और भावनाएँ समाप्त होती जा रही हैं।

(ii) जापानी मानसिक रुग्णता से पीड़ित हैं। इसका कारण उनकी असीमित आकांक्षाएँ, उनको पूरा करने के लिए किया गया भागम-भाग भरा प्रयास, महीने का काम एक दिन में करने की चेष्टा, अमेरिका जैसे विकसित राष्ट्र से प्रतिस्पर्धा आदि है। अगर हम दिन-रात कार्य करते रहेंगे और हमारे शरीर को न्यूनतम आवश्यकता के अनुसार अगर आराम नहीं दिया जाएगा तो हमारा शरीर निश्चित रूप से अनेक बीमारियों का घर बन जाएगा। जापानियों की सबसे प्रमुख समस्या यही है कि वह प्रगति की चाह में अमेरिका जैसे देश से प्रतिस्पर्धा करने के कारण उनकी शरीर को बहुत सारी बीमारियों ने घेर लिया है।

(iii) प्रस्तुत एकांकी से हमें शिक्षा मिलती है कि हमें अन्याय के विरुद्ध आवाज उठानी चाहिए | वजीर अली का चरित्र हिम्मत और बहादुरी से अन्याय के खिलाफ लड़ने की प्रेरणा देता है । वजीर अली की तरह हमें भी अपने देश के प्रति वफादार रहना चाहिए और दुश्मनों का सामना हिम्मत और साहस से करना चाहिए |

(iv) मुंशी प्रेमचंद की कहानी "बड़े भाई साहब" में, बड़े भाई साहब के व्यवहार में छोटे भाई के प्रति नरमी आने के कई कारण थे:

i. **छोटे भाई की मेहनत और लगन:** कहानी में छोटा भाई अपनी पढ़ाई में कठोर परिश्रम करता है, परीक्षा में प्रथम आता है।
ii. **बड़े भाई का आत्म-मंथन:** छोटे भाई की सफलता बड़े भाई के लिए आत्म-मंथन का कारण बनती है। उसे अपनी गलतियों पर पश्चाताप करता है। यह पश्चाताप और आत्म-मंथन उसे छोटे भाई के प्रति नरम बनाता है।
iii. **छोटे भाई का स्नेह और सम्मान:** छोटा भाई बड़े भाई के प्रति सदैव स्नेह और सम्मान प्रदर्शित करता है।
iv. **परिस्थितियों का प्रभाव:** कहानी में समय के साथ परिस्थितियां बदलती हैं। मुश्किल समय में छोटा भाई बड़े भाई का सहारा बनता है और उसकी हर संभव मदद करता है।

खंड ग - काव्य खंड (पाठ्यपुस्तक)

9. **अनुच्छेद को ध्यानपूर्वक पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिये:**

हम घर जाल्या आपणाँ, लिया मुराड़ा हाथि।
अब घर जालौं तास का, जो चले हमारे साथि।।

(i) **(ग)** सभी
व्याख्या:
सभी

(ii) **(ख)** अपना
व्याख्या:
अपना

(iii) **(घ)** फक्कड़, ज्ञान-मार्गी संतों का

व्याख्या:

फक्कड़, ज्ञान-मार्गी संतों का

(iv) **(ख)** ब्रजभाषा

व्याख्या:

ब्रजभाषा

(v) **(घ)** विकल्प (i) और (ii)

व्याख्या:

कबीर अपने अहं को त्यागने की बात करते हैं और भौतिक आकर्षणों से दूर रहने की बात करते हैं।

10. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर लगभग 25-30 शब्दों में दीजिए:

(i) इस पद में कवयित्री मीरा भगवान श्री कृष्ण के भक्त - प्रेम का वर्णन करते हुए कहती हैं कि आप अपने भक्तों के सभी प्रकार के दुखों को हरने वाले हैं अर्थात दुखों का नाश करने वाले हैं। मीरा अपने प्रभु की झूठी प्रशंसा भी करती है, प्यार भी करती हैं और अवसर आने पर डांटने से भी नहीं डरती। श्रीकृष्ण की शक्तिओं व सामर्थ्य का गुणगान भी करती हैं और उनको उनके कर्तव्य भी याद दिलाती हैं।

(ii) कविता में तोप और चिड़ियों के माध्यम से कवि अपनी बात कह रहे हैं। तोप को अत्याचारी और क्रूर शासन व्यवस्था के रूप में दर्शाया गया है। जैसे कि तोप ने अपने जमाने में अनेकों वीरों को मौत के घाट उतार दिया था, और वही तोप अब बाग के द्वार पर चिड़ियों के खेलने की वस्तु है। कवि चिड़ियों के माध्यम से यह बताना चाहता है कि अत्याचारी शासक और सत्ता का अंत एक-न-एक दिन अवश्य होता है। अर्थात् स्वार्थी तथा भाई-भतीजावाद की नीति पर चलने वालों को जनता एक-न-एक दिन अवश्य ही उखाड़ फेंकती है।

(iii) पंक्ति "**साँस थमती गई, नब्ज जमती गई**" के संदर्भ में, सैनिक जीवन की कठिनाइयाँ इस प्रकार स्पष्ट होती हैं:

- **मौसम संबंधी कठिनाइयाँ**: सैनिक कठोर मौसम की परिस्थितियों का सामना करते हैं, जिससे उनकी शारीरिक स्थिति प्रभावित होती है।
- **दुर्गम पर्वतीय क्षेत्रों में तैनाती**: वे लंबे समय तक दुर्गम और कठिन पर्वतीय क्षेत्रों में तैनात रहते हैं, जहां पहुंचना और वहाँ रहना चुनौतीपूर्ण होता है।
- **किसी भी क्षण मृत्यु से सामना**: उनके जीवन में किसी भी क्षण मृत्यु का सामना करना पड़ सकता है, जो मानसिक और शारीरिक दोनों प्रकार की कठिनाइयाँ पैदा करता है।

(iv) कविता के अनुसार कवि प्रार्थना करते हैं कि वे ईश्वर का स्मरण केवल दुःख में ही नहीं सुख में भी करें। वे कहते हैं कि संसार में मुझे केवल हानि ही प्राप्त हो, अथवा दुख के समय में पूरा संसार मुझे धोखा दे, फिर भी मैं तुम्हारा स्मरण करूँ और तुम पर तनिक भी संदेह न करूँ।

खंड ग - संचयन (पूरक पाठ्यपुस्तक)

11. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 50-60 शब्दों में दीजिए:

(i) हरिहर काका को परिवार व ठाकुरबारी दोनों से धोखा मिला। सभी उनकी जमीन-जायदाद को हड़प लेना चाहते थे। किसी को उनकी भावनाओं की कद्र नहीं थी। उनके जीवन में आई इन कठिनाइयों का मूल कारण वर्तमान समय में सामाजिक व पारिवारिक रिश्तों में स्वार्थ और लालच का बढ़ना है, जिसके कारण समाज में व परिवार में प्रेम, सेवा, त्याग, सहानुभूति जैसे मानवीय मूल्य समाप्त हो गए हैं। हरिहर काका की ज़मीन-जायदाद पर परिवार वालों की कुदृष्टि थी। वहीं ठाकुरबारी भी घरवालों की आपसी कलह का फायदा उठाने को तत्पर थी। इस प्रकार के समाज में फैली इस समस्या के समाधान का यही उपाय है कि समाज व परिवार में मानवीय मूल्यों की स्थापना होनी चाहिए। लोगों को परिवार में एक-दूसरे के सुख-दुःख, आपद-विपद, बीमारी आदि में सहयोग देना चाहिए। पारिवारिक मतभेदों को आपसी बातचीत से सुलझाना चाहिए। महंत जैसे पाखंडियों से दूर रहना चाहिए। घर की कलह में बाहरी हस्तक्षेप को नकार देना चाहिए। परिवार के लोगों में मतभेद भले ही हों, मन भेद नहीं होने चाहिए।

(ii) ओमा छात्र नेता था। उसका शरीर विचित्र साँचे में ढला हुआ था। वह ठिगना और हट्टा-कट्टा बालक था, परन्तु उसका सिर बहुत बड़ा था। उसे देखकर यूँ लगता था मानो किसी बिल्ली के बच्चे के माथे पर तरबूज रखा है। उसकी आँखें नारियल जैसी और चेहरा बंदरिया जैसा था। उसका सिर इतना भयंकर था कि वह लड़ाई में सिर की भयंकर चोट करता था। उसकी चोट से लड़ने वाले की पसलियाँ टूट जाती थीं। बच्चे उसके सिर के वार को रेल-बंबा कहते थे। वह स्वभाव से लड़ाका तथा मुँहफट था।

(iii) इफ़्फ़न और टोपी शुक्ला अलग-अलग मज़हब के थे। इसके बावजूद दोनों पक्के दोस्त थे। उनकी दोस्ती के बीच मज़हब की दीवार नहीं आई। दोनों प्रेम के अटूट बंधन में बँधे थे। इफ़्फ़न के बिना टोपी अधूरा सा था। जब इफ़्फ़न के पिता का तबादला हुआ तो टोपी बिल्कुल अकेला रह गया था। इसके बाद तो कभी कोई मित्र नहीं बना पाया। आज के समय में ऐसी दोस्ती इस जमाने में हो जाए तो इंसान का जीवन ही बदल जाए। इस स्वार्थी दुनिया में सच्चा दोस्त मिलना बहुत मुश्किल है। वर्तमान समय में ऐसे ही सच्चे और अच्छे लोगों की देश को जरूरत है। लोगों को हरिहर काका की तरह प्रताड़ित नहीं होना चाहिए न ही मौन रहकर सब कुछ सहन करना चाहिए क्योंकि यह भौतिक दुनिया स्वार्थों से भरी हुई है। यहाँ सभी व्यक्ति स्वार्थी एवं लोलुप प्रवृत्ति के हैं। पारिवारिक संबंध उनके लिए अधिक मायने नहीं रखते हैं। स्वार्थ एवं (लालच) से परिपूर्ण इस संसार में व्यक्ति की कद्र नहीं होती है। जिस तरह हरिकर काका महंत व भाई की वजह से सदमे के कारण बिलकुल मौन हो गए। इसलिए बुजुर्ग हमेशा अपनी संपत्ति अपने ही नाम रखे और मोह में आकर अपने जीते-जी अपनी संपत्ति को कभी भी अपनी संतान के नाम न करें।

खंड घ - रचनात्मक लेखन

12. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर लगभग 120 शब्दों में अनुच्छेद लिखिये:

(i) **प्रातःकालीन भ्रमण**

प्रातःकालीन भ्रमण शरीर को स्वस्थ और निरोगी रखने की शारीरिक क्रियाओं में से एक है। प्रातःकाल के भ्रमण से मनुष्य को स्वच्छ वायु प्राप्त होती है, जिससे मनुष्य में एक नवस्फूर्ति और नवजीवन का संचार होता है। मनुष्य प्रकृति के संपर्क में आकर आनंद का अनुभव करता है। प्रकृति के मनोरम दृश्यों को देखकर उसका मन प्रफुल्लित हो उठता है। प्रातःकालीन भ्रमण करने से हमारी शारीरिक शक्ति के साथ-साथ मानसिक शक्ति

का भी विकास होता है। हमारे मन से विकार दूर हो जाते हैं। प्रातःकाल मन प्रसन्न होने के कारण मनुष्य का संध्या तक का समय बड़ी प्रसन्नता से व्यतीत होता है।

सुबह की ठंडी वायु प्रत्येक प्राणी के लिए लाभदायक होती है। सभी जानते हैं कि हमारे लिए ऑक्सीजन बहुत महत्वपूर्ण है । दिन के समय तो यह मोटरगाड़ियों आदि के धुएँ से मिलकर प्रदूषित हो जाती है । दोपहर व अन्य समय में शुद्ध ऑक्सीजन का मिलना दुष्कर होता जा रहा है । अत: प्रात:काल सर्वथा उपयुक्त होता है । प्रात:कालीन भ्रमण से मनुष्य अधिक मात्रा में शुद्ध ऑक्सीजन ग्रहण करता है । इससे शरीर में उत्पन्न अनेक विकार स्वत: ही दूर हो जाते है।

प्रातःकालीन भ्रमण से व्यक्ति के शरीर तथा मन मस्तिष्क में तरोताज़गी का संचार होता है। प्रातःकालीन भ्रमण व्यक्ति की सेहत के लिए भी बहुत उपयोगी एवं लाभदायक है। हमें प्रातःकाल नियमित रूप से भ्रमण करना चाहिए, जिससे हमारा मन, बुद्धि और शरीर शांत, प्रसन्न एवं दृढ़ रह सके। अतः स्वस्थ, निरोगी, प्रसन्नचित्त एवं दीर्घजीवी बनने के लिए प्रातःकाल का भ्रमण सर्वोत्तम साधन है। वर्तमान युग में तो यह एक वरदान के समान है।

(ii) आजकल की दुनिया में इंटरनेट ने हमारे जीवन को अद्वितीय तरीके से प्रभावित किया है। इसे तकनीक का एक अद्वितीय वरदान माना जा सकता है। इंटरनेट ने हमें एक नई दुनिया की ओर ले जाया है, जिसमें हम सूचनाओं की खान से जुड़ सकते हैं और जानकारी का बहुत सारा स्रोत है। इसके बिना हमारा जीवन सोचने के लिए अधूरा हो जाता।

इंटरनेट ने सूचनाओं की खान को एक सच्ची क्रांति का संकेत दिया है। पहले, सूचनाओं को प्राप्त करने के लिए हमें पुस्तकें और समाचार पत्रिकाएँ ही उपलब्ध थीं, लेकिन अब हम इंटरनेट के माध्यम से जिस तरीके से सूचनाओं की खान से जुड़ सकते हैं, वह अद्भुत है। हम गूगल और अन्य खोज इंजन्स का उपयोग करके किसी भी विषय पर तुरंत जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। यह एक महत्वपूर्ण तरीका है जिससे हम अपने ज्ञान को बढ़ा सकते हैं और समय की बचत कर सकते हैं।

इंटरनेट से हमें अनगिनत सूचना स्रोत मिलते हैं। हम विभिन्न वेबसाइट्स, वेब पोर्टल्स, ब्लॉग, सोशल मीडिया, और अन्य स्रोतों से सूचनाएं प्राप्त कर सकते हैं। यहाँ तक कि हम अपनी रुचि और आवश्यकताओं के हिसाब से विशेष तरीके से समाचार और जानकारी तक पहुँच सकते हैं। इससे हमारा ज्ञान बढ़ता है और हम अपनी रुचियों के हिसाब से जानकारी चुन सकते हैं।

इंटरनेट के आगमन के साथ हमें सजगता और विवेकपूर्णता की आवश्यकता हो गई है। इंटरनेट पर आपको अनगिनत जानकारी मिलती है, लेकिन यह भी असत्य और दुर्भाग्यपूर्ण जानकारी से भरा हो सकता है। इसलिए हमें सच्चाई की पुष्टि करने के लिए और सही जानकारी प्राप्त करने के लिए सजग रहना चाहिए। हमें जानकारी के स्रोत की पुष्टि करनी चाहिए और अपने सोचने की क्षमता का प्रयोग करना चाहिए ताकि हम सही और सत्य की ओर बढ़ सकें।

(iii) भारत देश मुझे अपने प्राणों से भी अधिक प्रिय है। मुझे अपने भारतीय होने पर गर्व का अनुभव होता है। मेरा देश संसार के सभी देशों से निराला है और संसार के सब देशों से प्यारा है। मैं भारत को विश्व के शक्तिशाली देश के रूप में देखना चाहता हूँ। मैं ऐसे भारत का सपना देखता हूँ, जो भ्रष्टाचार, शोषण और हिंसा से मुक्त हो। मेरे सपनों का भारत 'सुशिक्षित भारत' है। उसमें अनपढ़ता, निरक्षरता और बेरोज़गारी का कोई स्थान नहीं है। मैं चाहता हूँ कि हमारे देश के नियोजक ऐसी शिक्षा लागू करें, जिसके बाद व्यवसाय या नौकरियाँ सुरक्षित हों। कोई भी व्यक्ति अशिक्षित न हो और कोई भी शिक्षित बेरोज़गार न हो। मैं चाहता हूँ कि भारत सांप्रदायिक दंगों-झगड़ों से दूर रहे। सब में आपसी भाईचारा और प्रेम का संबंध हो। राष्ट्रीय एकता का संचार हो। जो सम्मान भारत का प्राचीन काल में था वही सम्मान मैं पुनः उसे प्राप्त कराना चाहता हूँ।

मैं फिर से रामराज्य की कल्पना करता हूँ, जिसमें सभी लोगों को जीने के समान अवसर प्राप्त हो सकें। भारत एक बार फिर 'सोने की चिड़िया' बन जाए। मेरे सपनों का भारत वह होगा, जो राजनीतिक आध्यात्मिक, सांस्कृतिक, आर्थिक और वैज्ञानिक आदि विभिन्न दृष्टियों से उन्नति के पथ पर अग्रसर होगा। भावी भारत के सपनों की पूर्णता के लिए आवश्यक है कि हमारे देश का प्रत्येक नागरिक देश की प्रत्येक कुरीति को समूल नष्ट करने का दृढ़ संकल्प करें। देश तकनीकी रूप से उन्नत हो और सभी क्षेत्रों में विकसित हो सके। अन्त में, मैं चाहता हूं कि भारत एक ऐसा देश हो जहां महिलाओं को सम्मान दिया जाता हो, उनके साथ सभ्य व्यवहार किया जाता हो और पुरुषों के रोज़गार के समान अवसर दिए जाते हो।

13. सेवा में,
सचिव
गणपती सोसाइटी
हरी नगर,
दिल्ली - 110021
दिनांक - 13.5.2021

विषय - लोगों की सुरक्षा के लिए मास्क का सही तरीके से प्रयोग करने हेतु सचिव को पत्र।

महोदय,

सविनय निवेदन यह है कि मैं अंकिता शर्मा आपके ही सोसाइटी में रहने वाली सदस्य हूँ। मैं सोसाइटी के ब्लॉक-सी की सदस्य हूँ। सोसाइटी में हो रही कुछ बातों से आपको अवगत कराना चाहती हूँ। दरअसल, आपको तो पता ही है कि कोरोना महामारी किस तरह फैल रही है। ऐसे में हम सभी को अपने तथा आस-पास के लोगों की सुरक्षा के लिए मास्क का सही तरीके से प्रयोग करना आवश्यक है। मैं कुछ दिनों से देख रही हूँ कि लोग अब सोसाइटी में मास्क का प्रयोग नहीं कर रहे हैं।

अगर हम इस समय मास्क का प्रयोग नहीं करेंगे तो सभी का जीवन खतरे में आ सकता है। अतः आपसे मेरा यह निवेदन है कि किसी भी तरह लोगों को मास्क पहनने के लिए जागरूक कर कुछ नियम निर्धारित करें ताकि सभी लोगों की सुरक्षा हो सके।

धन्यवाद
भवदीय
अंकिता शर्मा

ब्लॉक-सी
फ़्लैट नंबर - 15

अथवा

सेवा में,
श्रीमान प्रधानाध्यापक जी,
के. वी. विद्यालय,
आगरा।
विषय - खेलने के अवसर न मिलने के संदर्भ में।
महोदय,
सविनय निवेदन है कि मैं कक्षा दसवी 'ब' का छात्र हूँ। हमारी कक्षा का प्रत्येक मंगलवार, बुधवार और शुक्रवार कालांश-6 खेलने के लिए होता है लेकिन कक्षा में छात्र-संख्या अधिक होने से सभी के खेलने की पर्याप्त व्यवस्था नहीं होने की बात कहकर कई छात्रों को खेलने का अवसर नहीं दिया जाता जिससे वे छात्र यहाँ-वहाँ व्यर्थ की गपशप में लगकर समय बर्बाद करते हैं अथवा अन्यों के खेल में बाधा उत्पन्न करने का प्रयास करते हैं जोकि उचित नहीं है।
मेरा सुझाव है कि इस समस्या के समाधान के लिए वैकल्पिक व्यवस्था अपनाई जाए जैसे कि कुछ छात्रों को मंगलवार, कुछ को बुधवार व अन्य को शुक्रवार को खेलने ले जाएँ और खेल न पाने वाले छात्रों को लाइब्रेरी या स्मार्ट क्लास आदि में भेजकर उनके समय व ऊर्जा का सदुपयोग किया जाए।
आशा है आप हमारी कक्षा की खेल समस्या का शीघ्र ही समाधान करने की कृपा करेंगे।
धन्यवाद।
आपका आज्ञाकारी शिष्य,
गौरव
कक्षा - 10 ब
दिनांक ....

14.

गोविन्द कॉलोनी
इंदिरा नगर, उ. प्र.
आवश्यक सूचना
दीवाली मेला हेतु

दिनांक-
दिनांक 04/11/20XX को कॉलोनी परिसर में समिति के सचिव की ओर से 'दीवाली मेला' आयोजित किया जा रहा है। इसमें दुकान लगाने के लिए इच्छुक व्यक्ति सचिव के पास ₹ 250 सहयोग राशि देकर अपना नामांकन करा लें।
विजय
(सचिव)

अथवा

विकास माध्यमिक विद्यालय
सूचना

09/10/2023

कैरियर परामर्श कार्यशाला

मैं हर्ष चतुर्वेदी, विकास माध्यमिक विद्यालय के छात्र परिषद् का अध्यक्ष हूँ। छात्रों को सूचित किया जाता है कि विद्यालय में कैरियर परामर्श कार्यशाला का आयोजन किया जा रहा है। इसका उद्देश्य आपको अपने लक्ष्य के प्रति जागरूक करना है। वहाँ उपस्थित काउन्सलर आपके कैरियर में आपको मार्गदर्शन प्रदान करेंगे। अतः सभी इसमें अवश्य भाग लें। समय एवं अन्य वितरण इस प्रकार है -
दिनांक: 12/10/2023 से 19/06/2023 तक
समय: सांय: 5 बजे से 7 बजे तक
स्थान: विकास माध्यमिक विद्यालय
हर्ष चतुर्वेदी
छात्र परिषद अध्यक्ष

कारोबार के लिए ऑफिस

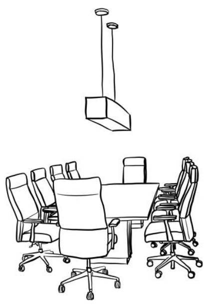

शीघ्र चाहिए

- ऑफिस शहर के बीचों-बीच हो
- ऑफिस लगभग पाँच हज़ार स्क्वायर फीट में हो
- मुख्य सड़क से लगा हुआ हो
- पानी-बिजली की सुविधा हो
- पार्किंग की सुविधा हो

संपर्क सूत्र
123, सेक्टर 4, गाँधी चौराहा, जयपुर
मो.न. 1234XXXX98
15. ईमेल : abc@gmail.com

अथवा

सिर्फ 125 रूपये

"बालों का रखे ख़याल
दे मज़बूती बेमिसाल
कीमत है कम
लेकिन इसमें है दम।"

बालों को रखे चमकदार और टूटने से बचाए

केश शैंपू

दो के साथ
एक कंडीशनर फ्री

16. From: pawan@mycbseguide.com

To: xyzschool@gmail.com

CC ...

BCC ...

विषय - अधिक खेल सामग्री उपलब्ध कराने का अनुरोध

महोदय,

जैसा कि आपको विदित है कि आगामी मास में जिले स्तर पर विभिन्न खेल प्रतियोगिताओं का आयोजन होने वाला है जिसमें हमारा विद्यालय भी भाग ले रहा है। हालांकि उपलब्ध साधनों से हमने अभ्यास किया है किन्तु वह पर्याप्त नहीं है। यह अनुरोध हम आपसे कर रहे हैं कि कृपया खिलाड़ियों की खेल सुविधाओं एवं सामग्री में कोई कमी न की जाए तथा खेल गतिविधियों हेतु अधिक फंड निधि की व्यवस्था की जाए ताकि आने वाली प्रतियोगिता में हम बेहतर प्रदर्शन कर सकें और विद्यालय का नाम रौशन कर सकें।

आशा है आप हम खिलाड़ियों के इस अनुरोध को स्वीकार करने की कृपा करेंगे।

पवन

अथवा

बात उन दिनों की है जब हम छोटे थे। मैं कक्षा चार में पढ़ती थी और मेरा भाई कक्षा छह में पढ़ता था। हमारी छुट्टियाँ चल रही थी। सारा दिन मौज-मस्ती में निकल जाता था। दिनभर खेलना-कूदना बस यही दिनचर्या थी उन दिनों हमारी। उस समय स्कूल भी जुलाई में खुलते थे आज की तरह अप्रैल में नहीं। एक दिन हमारे मामा-मामी और उनके बेटे-बेटी कुछ दिनों के लिए हमारे घर आए। अब तो हमारी और मौज हो गई। अपने भाई और बहनों के साथ घूमना-फिरना और खेलना चलता रहता था। एक शाम को हम सब छत पर बैठे थे। अचानक बारिश की छोटी-छोटी बूँदें गिरने लगी। घर के सभी बड़े नीचे कमरे में जाने लगे और हमसे भी नीचे कमरे में जाने को बोला, पर हमने मना कर दिया कि हम बारिश में भीगेंगे। मेरी माँ हमें जल्दी आने का कहकर नीचे कमरे में चली गई। हम बारिश के पानी में नाच-गा रहे थे, उछल-कूद कर रहे थे। हमारी बड़ी इच्छा थी कि हमें इन्द्रधनुष दिख जाए। अचानक मेरी ममेरी बहिन की नज़र आकाश की ओर गई। वो खुश होकर जोर-जोर से लगभग चिल्लाते हुए बोली वो देखो इन्द्रधनुष! हम सभी की नजर उधर की ओर चली गई। हम सभी उत्साहित होकर ख़ुशी से फूले न समाए। आखिर हमारी इन्द्रधनुष को देखने की इच्छा जो पूरी हो गई थी।